Geography

01

(Q.) भूगोल में तंत्र को परिभाषित कीजिए तथा तंत्र विश्लेषण के उपयोग की विवेचना कीजिए।

Ans ⇒ तन्त्र संकल्पना एवं तन्त्र विश्लेषण सभी विद्याओं में एक नवीन प्रयोग है। सप्तद्वीप वर्णन व्यवस्था पर्वत एवं नदी तन्त्र वर्णन में प्रयोग स्पष्ट दिखाई देती है। वर्तमान में तर्कसंगत विधि से तन्त्र उपागम एवं सामान्य तन्त्र सिद्धांत का भी निरन्तर विकास हो रहा है।

तन्त्र संकल्पना एवं तंत्र विश्लेषण का वर्तमान में नवीन रूप में सर्वप्रथम उपयोग जीव विज्ञान में डार्विन के विकासवादी सिद्धांत के बाद विकसित हुआ है। 1950 के बाद सामाजिक विज्ञान में भी चिंतन पर जोड़ दिया जाने लगा वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित होने के कारण भूगोल में इसका तेजी से प्रयोग होने लगा।

भूगोल में भूतल पर पाये जाने वाले तथ्य तत्व एवं घटित घटनाएँ चाहे वह प्राकृतिक कारणों से हो या मानवीय क्रियाशीलता से सूचित हो, भूमण्डल का अंग होने से कभी-कभी परोक्ष रूप से संबन्धित रहती है। ऐसी घटनाओं की अन्तः क्रियाएं निश्चिततः एक व्यवस्था का अनुसरण करती है यही व्यवस्था तंत्र कहलाती है।

2020-7-10 15:50

* ~~ग्रुशन~~ गुथोट ने तो पृथ्वी को महान स्वयं स्वरुपित स्वतंत्र संगठन माना है। इसे मानव परिवेश तंत्र कहा जाता है। किसी भी तंत्र में परिवर्तनकारी तंत्र कहा जाता है। किसी भी तंत्र में (प) स्थानिक होता है तो उसे स्थानिक तंत्र कहा जाता है।

प्रेस्टन जेम्स के अनुसार भूगोल के अभिनव सिद्धि स्थानिक तन्त्र में निहित है।

एडवर्ड एकरमान ने 1963 में स्पष्ट किया कि तन्त्र उपागम का अन्य भौतिक विज्ञानों के साथ-साथ भूगोल में भी विशेष महत्व है। तन्त्र के अध्ययन की महत्ता को उसने निम्न प्रकार से स्पष्ट करते हुए उसे भूगोल से संबंध बतलाया गया है।

(i) ऊर्जा एवं पदार्थ के विशिष्ट संरचनात्मक अध्ययन हेतु भौतिक विज्ञान में,

(ii) ब्रह्माण्ड की संरचना एवं पदार्थ स्वरूप निर्धारण हेतु खगोलभौतिकी, भू-भौतिकी, एवं खगोल विज्ञान में.

(iii) जैव जगत की उत्पत्ति एवं उनकी भौतिक एकता के अध्ययन हेतु जैव विज्ञानों में

(iv) बहुरूपी भिन्नतामूलक तत्वों के विविध तन्त्रों की क्रियाशीलता जैसे, जीवतन्त्र, समाजिक तन्त्र जो कि सभी विज्ञानों से सह-सम्बन्धित होकर कार्य करते है, के अध्ययन में,

एकरमान का तो यहां तक कहना

2020-7-10

(iii) इनका मान प्रेक्षित कर निर्णय किया जा सकता है।

* ⇒ तंत्र की व्याख्या

(1) तंत्र की संरचना :- तंत्र प्रधानता भूतल पर विकसित दृश्यभूमि में व्याप्त जटिल तथ्य स्वरूपों में पायें जाने वाले तत्वों के यथार्थ प्रमाण से निर्मित होते हैं। तंत्र में क्रमबद्धता बनी रहती है। इस प्रकार के संबंध बहुस्तरी एवं बहुरूपी भी हो सकता है। तन्त्रों की जटिलता का यही प्रधान आधार रहा है। तत्वों की तथ्यात्मक व्याख्या का गणितीय मान जितना सही प्राप्त कर सकेंगे तन्त्र उपागम एवं तंत्र विश्लेषण उतना ही शुद्ध एवं स्पष्ट होगा।

(2) तंत्र का आचरण :- तंत्र का आचरण उसके स्वयं के घटकों एवं तत्वों की विविधता सभी क्रियाशीलता, कड़ीबद्धता, उनकी संरचना में हुए विकास व ह्रास एवं लक्षण परिवर्तन से जुड़ा हुआ है। सुस्पष्ट, आकस्मिक अथवा तीव्र गति से परिवर्तन आयेगा तो उसकी संवेदनशीलता भी तत्काल प्रभावित होकर तंत्रों के आचरण को निश्चिततः प्रभावित करेगी। कुछ विद्वानों ने तन्त्र के आचरण एवं परिवेश से उनके संबंधों को समुच्चय रूप में सूत्रों से सह-संबंधित करने का भी प्रयास किया गया है।

(3) तंत्र की सीमाएं :- यद्यपि तंत्र की सीमाएँ सम्बंधित तत्वों, घटनाओं एवं परिवेश से प्रभावित रही हैंफिर भी तंत्र की प्रकृति, आचरण, उसके तत्व एवं घटित परिवेश, आदि के स्वरूप एवं महत्ता को भली प्रकार से समझने के लिए तंत्र का सीमांकन आवश्यक है।

जारेस्टर के अनुसार तंत्र का सीमांकन तत्वों के घटनाओं के आधार पर स्वतंत्र चिंतन का निर्धारित करना उचित है।

शोले एवं कैनेडी ने तंत्रों को दो समूहों में रखकर उन्हें उप-विभाजित किया है जो निम्न है—

(A) कार्यरूपी तंत्र
- (I) एकाकी तंत्र
- (II) खुला तंत्र
- (III) बन्द तंत्र
- (IV) खुला तंत्र एवं संग्रथित प्रदेश

(B) संरचनात्मक तंत्र
- (I) स्वरूपीय तंत्र
- (II) श्रृंखलाबद्ध तंत्र
- (III) प्रक्रिया प्रधान तंत्र
- (IV) नियंत्रित तंत्र

=> तंत्र विश्लेषण का भूगोल में उपयोग

भूगोल में पिछले चार दशकों से ही तंत्र विश्लेषण एवं तंत्र-विधि-तंत्र का निरन्तर व तेजी से उपयोग बढ़ता

है कि सम्पूर्ण मानवता एवं उसके परिवेश से सम्बन्धित तथ्यों को तन्त्र संकल्पना द्वारा समझना चाहिए।

पी. जेम्स के अनुसार, विभिन्न विद्वानों की संकल्पनाएँ-

रिटर — Coherent Relationship
गुयोट - The Great Life System
हर बर्टसन - Integration
ब्लाट - Process pattern of Dynamic Social Realationship.

परिभाषा:- वर्तमान में तन्त्र को अनेक विद्वानों ने परिभाषित करने का प्रयास किया है ऐसा करते समय कुछ ने समुच्चय सिद्धांत को, कुछ अन्य ने तत्वों के संबंध स्वरूपों की जटीलता व भिन्नता के मध्य स्थापित कड़ी बद्धता को तो कुछ अन्य ने गणितीय विधि का प्रयोग को आधारभूत माना है।

A System is any group of Phenomena which have a funcsional relationship. रोजर मिंसुल

परिभाषाओं से स्पष्ट है कि एक तंत्र के अंतर्गत निम्न तथ्य होता है-

(i) अंतरसंबंधित तत्व जिनका अपना व्यक्तित्व देखा जा सकता है।

(ii) इनमें आपस में समुच्चय संबंध स्थापित रहते है।

जा रहा है इस विज्ञान मे अंत: क्रिया, जटिल सम्बन्धों का स्वरूप एवं उनके अन्तर्सम्बधों का सभी स्तरों पर उसके प्रकरणों मे अध्ययन किया जाता है। तंत्र विधि में इस प्रकार के विधियों का गहराई से अध्ययन किया जाता है भूगोल में तंत्र ~~कि~~ विधा के समकक्ष चिन्तन का सीधा संबंध क्रियाशील आगाम से है भूगोल मे पारिस्थितिक अध्ययन का महत्व व्यारा द्वारा प्रस्तुत व्याख्यात्मक अध्ययन के बाद तेजी से बढ़ी है। इस दृष्टि से अयरे जॉन्स, ब्रूकफिल्ड एवं स्टोडार्क का पारिस्थितिक अध्ययन पर विशेष बल देना महत्वपूर्ण है

ज्यों-ज्यों भूगोल मे अनुभविक अध्ययन उससे संबंधित आंकड़े प्रस्तुत नही करता है ~~तब~~ से उसका अध्ययन किया जाता था।

वर्तमान में क्रिस्टॉल ने केन्द्रीय स्थान सिद्धान्त के नवीन विधि को समझने है